



# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

### भाषा-

**भाषा-** जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को लिखकर बोलकर व्यक्त करता है, उसे भाषा कहते हैं।  
दूसरे शब्दों में, शब्दों द्वारा मन के विचारों के आदान-प्रदान के साधन को 'भाषा' कहते हैं।  
भाषा के तीन रूप हैं (i) मौखिक (ii) लिखित (iii) सांकेतिक

**व्याकरण:-** व्याकरण उस शास्त्र को कहते हैं जिसके पढ़ने से मनुष्य किसी भाषा को शुद्ध- शुद्ध लिखना, पढ़ना और बोलना सीखता है।

### लिपि

भाषा को लिखने के ढंग को लिपि कहा जाता है।  
जैसे :- संस्कृत और हिंदी (देवनागरी), अंग्रेजी (रोमन) और उर्दू (फारसी) लिपि में लिखी जाती है।

### व्याकरण के खंड

1. वर्ण विचार 2. शब्द विचार 3. वाक्य विचार 4. चिन्ह विचार 5. छंद विचार

### वर्ण

**वर्ण -** भाषा की मूल ध्वनि और ध्वनि के प्रतीक चिन्ह को वर्ण कहा जाता है।

या, भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं।

**वर्णमाला -** वर्णों के क्रमबद्ध समुदाय को 'वर्णमाला' कहते हैं।

आधुनिक हिंदी व्याकरण में कुल 52 वर्ण हैं

स्वर वर्ण = अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ (11)

स्पर्श वर्ण = कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग (25 वर्ण)

अन्तः स्थ व्यंजन = य, र, ल, व (4)

ऊष्म व्यंजन = श, ष, स, ह (4)

संयुक्त व्यंजन = क्ष, त्र, श्र और ज्ञ

द्विगुण व्यंजन = ड, ढ अयोगवाह = अं, अः

### स्वर के प्रकार

1. मूल स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ

2. संयुक्त स्वर - ऐ (अ + ए), औ (अ + ओ)

**मूल स्वर के दो भेद होते हैं**

**ह्रस्व स्वर** - अ, इ, उ, ऋ - के उच्चारण में कम समय लगता है।

**दीर्घ स्वर** - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ के उच्चारण में दुगुना समय लगता है।

**स्वर वर्ण -** स्वर वर्ण उसे कहा जाता है जिसका उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता से होता है।

जैसे :- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः

**व्यंजन वर्ण -** जो 'वर्ण' स्वर की सहायता से बोला जाता है।

अर्थात्, जिस वर्ण का उच्चारण स्वर के सहयोग से होता है, उसे 'व्यंजन' कहा जाता है।

जैसे:- क, ख, च, छ, य, ह इत्यादि

**'संयुक्ताक्षर' दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं।**

जैसे - क् + ष = क्ष, त् + र = त्र

ज् + ज = ज्ञ, श् + र = श्र

### उच्चारण स्थान

कण्ठ - कवर्ग, अ, आ, ह - कंठ्य वर्ण

तालु - चवर्ग, इ, ई, य, श - तालव्य वर्ण

मूर्धा - टवर्ग, र, ऋ, ष - मूर्धन्य वर्ण

दन्त - तवर्ग, ल, स - दंत्य वर्ण

ओष्ठ - पवर्ग, उ, ऊ - ओष्ठ्य वर्ण

नासिका - न, म, ण, ज, - नासिक्य वर्ण

### शब्द- विचार

'व्याकरण' के जिस भाग में शब्दों का भेद, अवस्था और व्युत्पत्ति का वर्णन किया जाता है, उसे 'शब्द- विचार' कहा जाता है।

शब्द - दो या दो से अधिक वर्णों की सार्थक मेल से शब्द बनते हैं।

जैसे - घर, कमल, बालक, सीता इत्यादि

**व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्द चार प्रकार के होते हैं**

(i) **तत्सम** - हिंदी में संस्कृत के मूल शब्द को तत्सम कहते हैं

जैसे - जगत, फल, पुष्प, पुस्तक, पृथ्वी

(ii) **तद्भव** - तत्सम के बिगड़े हुए रूप को तद्भव कहते हैं

जैसे - आग, कुबड़ा, कपूर इत्यादि

|        |       |
|--------|-------|
| तत्सम  | तद्भव |
| अग्नि  | आग    |
| अष्ट   | आठ    |
| ओष्ठ   | ओंठ   |
| चन्द्र | चाँद  |
| दधि    | दही   |



**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

|        |      |
|--------|------|
| दुग्ध  | दूध  |
| नग्न   | नंगा |
| रात्री | रात  |

(iii) देशज-देश की बोलचाल की भाषा में पाए जानेवाले शब्द 'देशज' कहलाते हैं।

जैसे -डिबिया ,फुनगी,तेंदुआ ,लोटा ,पगड़ी इत्यादि

(iv) विदेशज -जिन शब्द का जन्म विदेश में हुआ है ,उन्हें 'विदेशज' कहते हैं।

जैसे - हॉस्पिटल,डॉक्टर,बुक ,टेबुल ,आराम ,इनकार,मुहब्बत,हुस्न,मेहमान,इत्यादि

रचना या बनावट की दृष्टि से तीन प्रकार की होते हैं

(i) रूढ़ - जिन शब्दों के खंड किये जाने पर कोई अर्थ न निकले ,उन्हें रूढ़ कहते हैं

जैसे - नाक ,कान ,ज्ञान

(ii) यौगिक- ऐसे शब्द ,जो दुसरे शब्दों के मेल से बने हैं और जिनके सभी खंड सार्थक होते हैं , 'यौगिक' कहलाते हैं ।

जैसे - घुडसवार ,विद्यासागर,हिमालय ,विद्यालय इत्यादि

(iii) यौगरूढ़ - ऐसे यौगिक शब्द ,जो साधारण अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ ग्रहण करें , 'यौगरूढ़' कहलाते हैं ।

जैसे - लम्बोदर ,दशानन ,चंद्रशेखर इत्यादि ।

3.रूपान्तर की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के होते हैं

(i) विकारी शब्द - जिनके रूप लिंग ,वचन ,कारक और पुरुष के अनुसार बदलते हैं,विकारी कहलाते हैं

(i) संज्ञा (ii) सर्वनाम (iii) विशेषण (iv) क्रिया

(ii) अविकारी शब्द - जिनके रूप नहीं बदलते हैं,अविकारी कहलाते हैं। अविकारी को 'अव्यय' भी कहते हैं

(i) क्रिया विशेषण (ii) सम्बन्धबोधक (iii) समुच्चय बोधक (iv) विस्मयादि बोधक

### संज्ञा

किसी प्राणी, वस्तु ,स्थान और भाव के नाम को संज्ञा कहा जाता है ।

जैसे:- राम, कृष्ण, कमरा ,भारत, बिहार, मिठास इत्यादि

### संज्ञा के पांच भेद हैं

व्यक्तिवाचक संज्ञा :- राम, हिमालय, गंगा ,पटना

जाति वाचक संज्ञा :- गाय ,फूल, आदमी, औरत

भाववाचक संज्ञा :- बुढ़ापा, चतुराई ,मित्रता

समूह वाचक संज्ञा :- सेना, सभा, मेला, कक्षा

द्रव्यवाचक संज्ञा :- सोना, चांदी, तेल, घी

### सर्वनाम

नाम के बदले जिस शब्द का प्रयोग किया जाए उसे सर्वनाम कहते हैं

जैसे - मैं,आप, तुम, हमलोग इत्यादि

सर्वनाम के छः भेद हैं ।

हिंदी में कुल 11 सर्वनाम हैं ।

सर्वनाम के भेद

(i) पुरुष वाचक सर्वनाम :- मैं ,आप,वह, वेलोग

(ii) निश्चय वाचक सर्वनाम :- यह ,वह,

(iii) अनिश्चय वाचक सर्वनाम :-कोई ,कुछ

(iv) संबंध वाचक सर्वनाम :-जो,सो

(v) निजवाचक सर्वनाम :- स्वयं,खुद ,आप ही

(vi) प्रश्नवाचक सर्वनाम :- कौन ,क्या

### विशेषण

विशेषण- संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं ।

जैसे :- राम काला है । वह सुन्दर है ।

यहाँ , काला और सुंदर विशेषण है ।

विशेष्य - विशेषण जिस शब्द की विशेषता बताता है ,उस शब्द को विशेष्य कहा जाता है ।

जैसे :- राम काला है । वह सुन्दर है ।

यहाँ , राम और वह की विशेषता बताई गई है । अतः राम और वह विशेष्य कहलाएगा

प्रविशेषण - विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द को प्रविशेषण कहते हैं ।

### विशेषण के चार भेद हैं

गुणवाचक विशेषण:-काली टोपी ,गोल चेहरा, भूखा पेट

परिमाणवाचक विशेषण:- थोड़ा दूध, पूरा आनंद, और घी

संख्यावाचक विशेषण :- चार रुपए, तीस दिन ,सात महीने

सार्वनामिक विशेषण :- कोई पुस्तक , यह पुस्तक, वह नौकर

ध्यान दें - जिसे गिन सकते हैं उसमें संख्यावाचक और जिसे नहीं गिन सकते उसमें परिमाण वाचक होता है ।



**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

### क्रिया

क्रिया – जिस शब्द से किसी कार्य के होने या करने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं ।

जैसे- खाना, पीना, दौड़ना, हंसना, पढ़ना इत्यादि  
क्रिया का मूल धातु है । जैसे – चल, पा, हस, देख इत्यादि

### क्रिया के दो भेद हैं -

(i) **सकर्मक क्रिया**- जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं ।

अथवा, जिस क्रिया के साथ कोई कर्म हो या कर्म की सम्भावना हो जैसे- हरी आम खाता है। वह लिखता है ।

(ii) **अकर्मक क्रिया** :- जिस क्रिया का फल कर्ता पर पड़े उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं ।

जैसे- बालक सोता है। सोना, रोना, हँसना इत्यादि

### कुछ और प्रमुख क्रियाएँ

#### सहायक क्रिया

मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने में जो क्रियाएँ सहायक होती हैं, सहायक क्रिया कहलाती हैं ।

जैसे - वह खाता है। मैंने पढ़ा था । तुम जा रहे हो ।

(इसमें- है, था, रहे हो सहायक क्रिया है )

#### प्रेरणार्थक क्रिया

जिन क्रियाओं से इस बात का बोध हो कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे से करने के लिए प्रेरित करें, वे प्रेरणार्थक कहलाती हैं जैसे- पढ़वाना, लिखवाना, उठवाना, इत्यादि

(इसमें सामान्यतः वाना लगा रहता है)

#### पूर्वकालिक क्रिया

जब किसी क्रिया को करने से पूर्व ही कोई दूसरी क्रिया की जाए तो, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं ।

जैसे- वह खाकर सो गया, मैं दौड़कर बैठ गया इत्यादि

(यहाँ खाना और दौड़ना पूर्वकालिक क्रिया है)

#### काल

**काल** - क्रिया के जिस रूप से समय का बोध होता है, उसे 'काल' कहते हैं।

जैसे- वह जा रहा है (वर्तमान) । मैं दौड़ रहा था (भूतकाल)

हम लोग स्कूल जाएंगे (भविष्यत काल)

### काल तीन प्रकार के होते हैं -

(1.) **वर्तमान काल**- जिससे क्रिया के वर्तमान में होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं ।

जैसे- वह पढ़ता है । तुम जा रहे हो । मैं लिखता हूँ ।

### वर्तमान काल के तीन भेद हैं -

(i) **सामान्य वर्तमान** - इससे वर्तमान में होनेवाले सामान्य क्रिया का बोध होता है । जैसे- वह पढ़ता है । वह जाता है

(ii) **संदिग्ध वर्तमान** - इससे वर्तमान में होने वाली क्रिया में संदेह का बोध होता है ।

जैसे- वह जाता होगा । वह पढ़ता होगा ।

(iii) **तात्कालिक वर्तमान** - इससे क्रिया के तुरंत और लगातार होने का बोध होता है ।

जैसे - वह जा रहा है । वह पढ़ रहा है ।

### 2. भूतकाल

जिससे किसी कार्य के हो जाने पर समय के बीत जाने का बोध हो, उसे 'भूतकाल' कहते हैं । जैसे - वह पढ़ता था । हम जा रहे थे । मैंने लिखा ।

### भूतकाल के छः हैं -

(i) **सामान्य भूत**- इससे क्रिया के समाप्त हो जाने का बोध होता है । जैसे- मैंने खाया । वह रोया । मैंने देखा

(ii) **आसन्न भूत** - इससे क्रिया के तुरंत समाप्त होने का बोध होता है । जैसे - वह रोया है । मैंने देखा है । तूने लिखा है

(iii) **संदिग्ध भूत** - इससे क्रिया के होने में संदेह होता है ।

जैसे - वह रोया होगा । उसने लिखा होगा ।

मैंने देखा होगा

(iv) **पूर्ण भूत**- इससे क्रिया की पूर्ण समाप्ति का बोध होता है

जैसे- मैंने देखा था । उसने लिखा था । वह रोया था।

(v) **अपूर्ण भूत** - इससे क्रिया की अपूर्णता का बोध होता है ।

जैसे - वह रोता था । वह पढ़ता था । वह लिखता था ।

(vi) **हेतुहेतुमद भूत**- इससे किसी कारणवश क्रिया की पूर्णता या अपूर्णता दोनों का बोध होता है । जैसे- वह आता तो मैं जाता

### 3. भविष्यतकाल

जिससे क्रिया के भविष्य में होने का बोध हो, उसे भविष्य काल कहते हैं ।

जैसे- मैं पढ़ूंगा । वह जाएगा । हमलोग खेलेंगे ।

भविष्य काल के दो भेद हैं-



# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

(i) सामान्य भविष्यत् - इससे भविष्यत् में किसी साधारण क्रिया के होने का बोध होता है ।

जैसे - मैं पढ़ूंगा । हम जाएंगे

(ii) संभाव्य भविष्यत् - इससे भविष्यत् में होनेवाली किसी क्रिया की संभावना का बोध होता है ।

जैसे - मैं जाऊँ । तू लड़ें

**वाच्य**

वाच्य- क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अंतर्गत कर्ता, कर्म अथवा भाव - इसमें किसकी प्रधानता है और इसमें किसके अनुसार क्रिया के पुरुष, वचन आदि आये हैं ।

**वाच्य के भेद**

वाच्य के तीन भेद हैं -

(i) कर्तृवाच्य (ii) कर्मवाच्य (iii) भाववाच्य

**लिंग**

लिंग की परिभाषा- संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव की जाति

(स्त्री या पुरुष) का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं ।

**लिंग दो प्रकार के होते हैं**

हिंदी में लिंग दो संस्कृत में तीन और अंग्रेजी में चार हैं

(i) पुल्लिंग से पुरुष- जाति का बोध होता है ;

जैसे - राजा, घोड़ा, बालक (सजीव), मकान, नाटक, चश्मा (निर्जीव), दुखः, लगाव (भाव)

(ii) स्त्रीलिंग से स्त्री- जाति का बोध होता है

जैसे- रानी, बालिका (सजीव), हुई, कुर्सी, गर्दन (निर्जीव) लज्जा, बनावट (भाव)

**लिंग -निर्णय**

(क) अकारांत तत्सम शब्द पुल्लिंग होते हैं -

जैसे- धन, भवन, जल, शरीर, गृह, अकाल, हंस, परिवर्तन, कारण, वचन, सागर, त्रिभुज, नाटक, स्वास्थ्य, समाज, विवाह, धर्म, संदेश, छात्रावास, इत्यादि

(ख) हिंदी के आकारांत शब्द पुल्लिंग होते हैं ।

जैसे - लड़का, धारा, नाला, झगड़ा, धमाका, बुढ़ापा, दिखावा, पहनावा, चिमटा, जुर्माना, पहिया, कपड़ा, सिरका, लोहा, सोना, मसाला, गुस्सा, चश्मा, किस्सा

**स्त्रीलिंग शब्दों का लिंग**

आकारांत, इकरान्त, ईकारांत और उकारान्त तत्सम शब्द स्त्रीलिंग होते हैं ।

**आकारांत**

जैसे- दया, माया, कृपा, लज्जा, क्षमा, शोभा, सभा, घटना, नम्रता, सुंदरता, ईर्ष्या, भाषा, अभिलाषा, आशा, निराशा, इच्छा, आज्ञा, घोषणा, परीक्षा, योग्यता, सहायता, शिक्षा, सूचना, सेवा

**इकरान्त**

अनुमति, श्रुति, पूजा, जाति, समिति, नियुक्ति, शक्ति, हानि, परिस्थिति, संघि, शांति, छवि,

**ईकारांत**

नदी, नारी, कुंडली, गोष्ठी

**उकारांत** - मृत्यु, आयु, वस्तु, ऋतु, वायु

(शब्द का लिंग निर्धारण करने का सबसे आसान तरीका वाक्य बनाकर)

**शब्दों के वचन**

शब्द के उस रूप को 'वचन' कहते हैं, जिससे उसके एक या अनेक होने का बोध हो ।

जैसे - घोड़ा - घोड़े ; लड़का - लड़के

**वचन के दो प्रकार हैं -**

**एकवचन:-** जिससे एक का बोध हो, उसे एक वचन कहते हैं ।

जैसे- लड़का खाता है ।

**बहुवचन:-** जिससे एक से अधिक का बोध हो, उसे 'बहुवचन' कहते हैं ।

जैसे - लड़के जा रहे हैं ।

**पुरुष**

पुरुष तीन होते हैं

**उत्तम पुरुष :-** कहने या बोलने वाले को उत्तम पुरुष कहते हैं ।

जैसे :- मैं, हम, हमलोग

**मध्यम पुरुष:-** सुनने वाले को मध्यम पुरुष कहते हैं

जैसे - तुम, तू, तुमलोग

**अन्य पुरुष-** जिसके विषय में कहा जाए, उसे अन्य पुरुष कहते हैं ।

जैसे- वह, वेलोग, कोई

**उपसर्ग और प्रत्यय**

उपसर्ग की परिभाषा- 'उपसर्ग' उस शब्दांश को कहते हैं जो किसी शब्द के पहले जुड़कर शब्द का अन्य विशेष अर्थ प्रकट करता है ।

जैसे- अन, बन - अनबन (मनमुटाव), अप, मान (अपमान) इत्यादि





# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

हिंदी में हम जितने उपसर्ग प्रयोग करते हैं, वे अधिकतर 'संस्कृत भाषा' के हैं

**प्र-** प्रसन्न, प्रताप, प्रमोद, प्रसाद

**अप-** अपमान, अपराध, अपवाद,

**अव-** अवतार, अवज्ञा, अवगुण, अवसान

**अभि-** अभिलाषा, अभियोग, अभिशाप, अभिमान

**उप-** उपकुल, उपवन, उपवास, उपदेश, उपनाम

**उत्-** उत्कर्ष, उत्पन्न, उद्देश, उत्थान, उत्साह

**नि-** निरोध, निषेध, निगम, निकम्मा, निरोध

**अनु-** अनुशासन, अनुकरण, अनुसरण, अनुज

**अधि-** अधिपति, अधिकारी, अधिनायक

**अति-** अत्यंत, अतिरिक्त, अतिशय, अत्यावश्यक

**वि-** विद्रोह, विदेह, विजन, विज्ञान, विश्राम

**निस्-** निर- निर्बल, निःसंदेह, निर्विवाद, नीरस

**परा-** पराजय, पराभाव, परामर्श, पराक्रम,

**परि-** परिक्रमा, परिमाण, परिवर्तन, प्रतिनिधि

**सम्-** संकल्प, संगम, संग्रह, संतोष, संयोग

(उपसर्ग से बने शब्द में पहला एक या दो अक्षर उपसर्ग होता है)

**प्रत्यय**

प्रत्यय की परिभाषा - 'प्रत्यय' उस शब्दांश को कहते हैं, जो किसी शब्द के अंत में जुड़ कर उस शब्द के अर्थ को प्रकट करता है।

जैसे - भलाई शब्द में आई प्रत्यय है।

प्रत्यय के दो भेद हैं (i) कृत (ii) तद्धित

(प्रत्यय से बने शब्द में अंतिम के एक या दो अक्षर प्रत्यय होते हैं)

**संज्ञा विशेषण**

अंत अंतिम

अर्थ आर्थिक

अवश्य आवश्यक

अभिमान -अभिमानि

कागज़ -कागजी

क्रोध -क्रोधी

खेल -खेलाडी

गुण - गुणी

प्रमाण -प्रामाणिक

**कारक**

**परिभाषा-** संज्ञा सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसका संबंध सूचित हो उसे कारक कहते हैं।

जैसे - राम ने रावण को मारा

हिंदी में कारक के आठ भेद हैं

**कर्ता (ने)** - वाक्य में जो पद काम करने वाले के अर्थ में आता है उसे कर्ता कारक कहते हैं।

जैसे-मोहन पढ़ता है |यहां मोहन कर्ता है|इसकी विभक्ति ने लुप्त है

**कर्म (को)** - जिस पर क्रिया का फल पड़ता है उसे कर्म कहते हैं।  
राम ने रावण को मारा

**करण(से)** - जिससे काम हो, उसे 'कारण' कहते हैं।

जैसे-श्याम कलम से लिखता है।

**संप्रदान(को,के लिए)** - जिसके लिए क्रिया किया जाए उसे संप्रदान कहते हैं।

जैसे- शिष्य ने अपने गुरु के लिए सब कुछ किया  
गरीबों को धन दीजिए

**आपादन(से)** - जिससे किसी वस्तु को अलग किया जाए उसे अपादान कहते हैं।

जैसे - वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। बालक छत से गिर गया

**संबंध कारक (का,के,की,रा,रे,री)** - जिससे किसी वस्तु का संबंध हो उसे 'संबंध कारक' कहते हैं।

जैसे -राम का भाई लक्ष्मण है।

**अधिकरण(में,पर)** - जिससे क्रिया के आधार का पता लगे उसे अधिकरण कहते हैं।

जैसे - लड़की घोड़े पर बैठी है

वह अपने कमरे में बैठा है

**संबोधन(हे,अजी,अहो)** - जिससे किसी को पुकारा या संबोधित किया जाए उसे संबोधन कारक कहते हैं।

जैसे- हे, अजी, अहो, अरे इत्यादि

**संधि**

**परिभाषा** - दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'संधि' कहते हैं।

जैसे- विद्या + आलय = विद्यालय, देव+इंद्र = देवेंद्र

उत् +ज्वल = उज्ज्वल, नमः + कार = नमस्कार

संधि के तीन प्रकार हैं-

(i)स्वर संधि (ii) व्यंजन संधि (iii)विसर्ग संधि



# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

**स्वर संधि** - दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार अथवा रूप परिवर्तन को

स्वर संधि 'कहते हैं'।

जैसे- ज्ञाना+ आभाव = ज्ञानाभाव

**स्वर संधि के पांच भेद हैं**

दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण और अयादि स्वर संधि।

**(i) दीर्घ संधि**- यदि अ/आ/इ/ई/उ/ऊ/ऋ + इसी का ह्रस्व/दीर्घ आवें, तो दीर्घ हो जाएगा।

यानि, अ+आ = आ, इ+ई = ई, उ+उ/ऊ = ऊ

(हमेशा बड़ा वाला ही बनेगा)

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी, अन्न + अभाव = अन्नाभाव

विधु + उदय = विधूदय, मही + इंद्र = महीन्द्र

गुरु + उपदेश = गुरूपदेश, भू + ऊर्ध्व = भूधर्व

**इसी प्रकार इन शब्दों में संधि हुई है-**

शिवालय भोजनालय, महात्मा, परमात्मा, परमार्थ रामायण,  
सत्याग्रह, दिशांतर, कोणार्क, लज्जाभाव गिरिश, भानुदय, रत्नाकार,  
विद्यालय, महीश्वर, विधूदय, लघूर्मि, वधूत्सव

**(ii) गुण स्वर संधि -**

यदि अ/आ+(इ/ई)(उ/ऊ)(ऋ)=ए/ओ/अर हो जाता है।

(क्लास में अच्छे से समझ दिया जाएगा)

यानि, अ/आ+(इ/ई) = ए, अ/आ+(उ/ऊ)=ओ,

अ/आ+ऋ = अर

नर + इंद्र = नरेंद्र, रमा + ईश = रमेश

महा + इंद्र = महेंद्र, महा+उत्सव = महोत्सव

देव + ऋषि = देवर्षि, महा + ऋषि = महर्षि

**इसी प्रकार निम्न शब्द बने हैं**

देवेश, चंद्रोदय, महेश, राजेश, देवर्षि, महोदय,  
परोपकार, सूर्योदय, ब्रह्मर्षि, सप्तर्षि, जलोर्मी  
नरेंद्र, गंगोर्मी, सुरेश,

**(iii) वृद्धि स्वर संधि-**

यदि 'अ/आ+(ए-ऐ), (ओ-औ) = ऐ/औ होगा

यानि, अ/आ+(ए-ऐ)=ऐ, अ/आ+(ओ-औ)=औ

**यह सबसे आसान नियम है**

जैसे- एक + एक = एकैक, सदा+एव = सदैव

वन + औषधि = वनौषधि, महा+औषध = महौषध

मत + ऐक्य = मतैक्य, महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

**इसी प्रकार निम्न शब्द बने हैं**

तथैव, सुंदरौदन, महौज, महौषधि,

**(iv) यण स्वर संधि** - यदि (इ-ई)/(उ-ऊ)/ऋ + कोई भिन्न स्वर तो

(इ-ई) का य, (उ-ऊ) का व और 'ऋ' का र

अति + आवश्यक = अत्यावश्यक, यदि+अपि = यद्यपि

अति+उत्तम = अत्युत्तम, अनु + अय = अन्वय

सु + आगत = स्वागत, सखी+उवाच = सख्युवाच

मातृ + आनंद = मात्रानंद, पितृ + आदेश = पित्रादेश

**(v) अयादि स्वर संधि**- यदि (ए, ऐ, ओ, औ) के बाद कोई भिन्न स्वर

आये तो 'ए' का 'अय', 'ऐ' का 'आय', 'ओ' का

अव और 'औ' का 'आव' हो जाता है

जैसे - ने + अन = नयन, गै + अक = गायक

भो + अन = भवन, भौ + उक = भावुक

पौ + अन = पावन, नै + अक = नायक

**व्यंजन संधि**

**परिभाषा-** जहां व्यंजन वर्ण के साथ व्यंजन या स्वर की संधि में व्यंजन का विकार हो उसे 'व्यंजन संधि' कहते हैं

जैसे- दिक् + अम्बर = दिगम्बर, दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम

**इसके कोई निश्चित भेद नहीं हैं बल्कि कुछ नियम होते हैं**

**याद रखें**

वाक् + मय = वाङ्मय, जगत + नाथ = जगतनाथ

उत् + नति = उन्नति, अहम् + कार = अहंकार,

पन् + चम = पंचम, सम् + गम = संगम,

जगत + नाथ = जगदानंद, उत् + घाटन = उद्घाटन

उत् + चारण = उच्चारण, उत् + लास = उल्लास

**2. यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद 'म' या 'न' आये तो क्, च्, ट्, त्, प् अपने वर्ग के**

**पंचम वर्ण में बदल जाते हैं। जैसे-**वाक् + मय = वाङ्मय, जगत् + नाथ

जगन्नाथ, उत् + नति = उन्नति

**3. यदि 'म्' के बाद कोई व्यंजन वर्ण आये तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है या वह बादवाले वर्ग के पंचम वर्ण में भी बदल सकता है।**



# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNLJ3juxlfK31A1Q>**

जैसे-

अहम् + कार = अहंकार या अहङ्कार, पन् + चम = पंचम या पञ्चम,  
सम् + गम = संगम या सङ्गम

4. यदि त् के बाद कोई स्वर या ग, घ, द, ध, ब, भू, य, र, व् में कोई  
आये तो 'तू' के स्थान पर 'दू' हो जाता है।

जैसे-

जगत् + आनंद = जगदानंद, उत् + दाम = उद्दाम, उत् + घाटन =  
उद्घाटन

5. यदि 'तू' या 'द' के बाद 'च' या 'श' आये तो 'तू-दू' के स्थान पर  
'चू' और बादवाले 'श' का 'छ' हो जाता है।

जैसे-

उत् + चारण = उच्चारण, उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

6. यदि 'तू-दू' के बाद 'ल' रहे तो 'तू-दू' 'लू' में बदल जाते हैं और  
'नू' के बाद 'ल' रहे तो 'नू' का अनुनासिक के बाद 'लू' हो जाता है।

जैसे-उत् + लास = उल्लास, महान् + लाभ = महाल्लाभ

### विसर्ग संधि

परिभाषा - स्वर और व्यंजन के मेल से विसर्ग में जो विसर्ग होता है,  
उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

इसके कुछ नियम इस प्रकार हैं-

1. यदि विसर्ग के बाद 'च-छ-श' हो तो विसर्ग का 'श्', 'ट-ठ-ष' हो  
तो 'घ्' और 'त-थ-स' हो तो 'स्' हो जाता है।

जैसे-

नि: + चय = निश्चय, नि: + छल = निश्छल, नि: + तार = निस्तार,  
नि: + सार = निस्सार, नि: + शेष = निश्शेष, नि: + छीव = निष्छीव

2. यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार आये और विसर्ग के बाद का  
अक्षर क, ख, प, फ हो, तो विसर्ग का 'ष' हो जाता है।

जैसे-

नि: + कपट = निष्कपट, नि: + पाप = निष्पाप

नि: + फल = निष्फल, दु: + कर = दुष्कर

3. यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और विसर्ग के बाद क, ख, प, फ हो  
तो विसर्ग ज्यों-का-त्यों रहता है।

जैसे- प्रात: + काल = प्रातः काल, पय: + पान = पयःपान

4. यदि 'इ', 'उ' के बाद विसर्ग हो और विसर्ग के बाद 'र' आये तो  
'इ' का 'ई' हो जाता है और विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे- नि: + रस = नीरस, नि: + रोग = नीरोग, नि: + रव = नीरव

5. यदि विसर्ग के पहले 'अ' या 'आ' को छोड़ कोई दूसरा स्वर आये  
और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ और  
पंचम वर्ण हो या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' हो  
जाता है।

जैसे- नि: + उपाय = निरुपाय, नि: + गुण = निर्गुण, नि: + झर =  
निर्झर, दु: + गन्ध = दुर्गन्ध, नि: + जल = निर्जल, दु: + आत्मा =  
दुरात्मा, नि: + मल = निर्मल, नि: + धन = निर्धन

6. यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और विसर्ग के बाद वर्ग का तृतीय,  
चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो पहला 'अ' और  
विसर्ग मिलकर 'ओ' होता है। जैसे -

मन: + रथ = मनोरथ, मन: + हर = मनोहर, सर: + ज = सरोज  
सर: + वर = सरोवर, यश: + दा = यशोदा, यश: + धरा = यशोधरा  
वय: + वृद्ध = वयोवृद्ध

### संधि-पदों की सूची

अन्याय = अनि + आय, अत्यधिक = अति + अधिक, अतएव = अतः  
+ एव अत्यंत = अति + अंत, अत्युत्तम = अति + उत्तम, अब्ज =  
अप् + ज, अहंकार = अहम् + कार, अत्याचार = अति + आचार  
अन्यान्य = अन्य + अन्य, नाविक = नौ + इक, निश्छल = नि: + छल  
निश्चय = नि: + चय, निर्मल = नि: + मल, परमेश्वर = परम + ईश्वर  
पावन = पौ + अन, आशीर्वाद = आशी: + वाद, आविष्कार =  
आवि: + कार, पावक = पौ + अक, इत्यादि = इति + आदि  
उल्लास = उत् + लास, उद्धार = उत् + हार, उन्नति = उत् + नति  
उल्लंघन = उत् + लंघन, उच्चारण = उत् + चारण  
उदय = उत् + अय, प्रत्येक = प्रति + एक, प्रत्युत्तर = प्रति + उत्त  
पवन = पो + अन, परोपकार = पर + उपकार, पवित्र = पो + इत्र  
परीक्षा = परि + ईक्षा, पीताम्बर = पीत + अम्बर, उज्ज्वल = उत् +  
ज्वल, उद्योग = उत् + योग, उल्लेख = उत् + लेख  
एकैक = एक + एक, तल्लीन = तत् + लीन, तथैव = तथा + एव  
तथापि = तथा + अपि, तपोवन = तप: + वन, देवेन्द्र = देव + इन्द्र  
दिग्गज = दिक् + गज, दिग्गम्बर = दिक् + अम्बर, दुर्दिन = दु: + दि  
देवर्षि = देव + ऋषि, नमस्कार = नम: + कार, नयन = ने + अन  
नायक = नै + अक, स्वागत = सु + आगत, सज्जन = सत् + जन



# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

संतोष = सम् + तोष , संसार = सम् + सार, सदाचार = सत् + आचार  
 सतीश = सती + ईश , सर्वोत्तम = सर्व + उत्तम, सद्गति = सत् + गति  
 परंतु = परम् + तु, प्रातःकाल = प्रातः + काल, भवन = भो + अन  
 मनोहर = मनः + हर , महाशय = महा + आशय , महोत्सव = महा  
 + उत्सव , मनोज = मनः + ज , महेश = महा + ईश  
 मनोरथ = मनः + रथ , यद्यपि = यदि + अपि, यशोदा = यशः + दा  
 यथेष्ट = यथा + इष्ट , रामायण = राम + अयन , रमेश = रमा + ईश  
 विद्यालय = विद्या + आलय , सुरेन्द्र = सुर + इन्द्र  
 सच्चरित्र = सत् + चरित्र , सदैव = सदा + एव , संधि = सम् + धि  
 सूर्योदय = सूर्य + उदय , सरोज = सरः + ज , सरोवर = सरः + वर  
 षड्दर्शन = षट् + दर्शन , हिमालय = हिम + आलय

### समास

**परिभाषा**-दो या दो से अधिक पदों के मेल से बने पद को समास कहते हैं।

समास का अर्थ – संक्षिप्तीकरण कहते हैं।

### प्रमुख बातें याद रखें –

- समास में कई पदों का मेल होता है।
- समास के पहले पद को पूर्व पद एवं दूसरे पद को उत्तर पद कहा जाता है।
- समास के दोनों पद को एक साथ समस्त पद या समासिक पद कहा जाता है।
- समास के सभी पदों को अलग-अलग करना समास विग्रह कहा जाता है।
- समास के पदों के बीच का विभक्ति-चिह्न लुप्त हो जाता है।
- इसके पदों में कभी पहला और कभी अंतिम पद प्रधान होता है, कभी सभी पद प्रधान होते हैं जबकि कभी कोई अन्य पद भी प्रधान होता है।

### समास के भेद

इसके कुल 6 भेद होते हैं

- |              |              |                |
|--------------|--------------|----------------|
| (1) तत्पुरुष | (2) कर्मधारय | (3) बहुव्रीहि  |
| (4) द्वंद्व  | (5) द्विगु   | (6) अव्ययीभाव। |

**तत्पुरुष समास**- जिस समास में उत्तर पद प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। ऐसे समासिक पदों के बीच से विभक्ति चिह्न का लोप हो जाता है।

**तत्पुरुष समास** को पहचानने का सबसे आसान तरीका

इस समास के पदों का विग्रह करने पर कोई कारक चिह्न आता है।

जैसे – विद्यालय = विद्यालय के लिए आलय

(क) कर्म-तत्पुरुष - स्वर्गप्राप्त - स्वर्ग (को) प्राप्त

सिरतोड़ - सिर (को) तोड़नेवाला

चिड़ीमार - चिड़ियों (को) मारनेवाला

(ख) करण-तत्पुरुष- पददलित - पद (से) दलित

रसभरा - रस (से) भरा

मदमाता - मद (से) माता

(ग) संप्रदान-तत्पुरुष - रसोईघर - रसोई (के लिए) घर

देशभक्ति - देश (के लिए) भक्ति

पुत्रशोक - पुत्र (के लिए) शोक

स्नानघर - स्नान (के लिए) घर

(घ) अपादान-तत्पुरुष - नेत्रहीन - नेत्र (से) हीन

राज्यभ्रष्ट - राज्य (से) भ्रष्ट

धनहीन-धन (से) हीन

(ङ) संबंध-तत्पुरुष- अन्नदान - अन्न (का) दान

श्रमदान - श्रम (का) दान

राजभवन - राजा (का) भवन

राजपुत्र - राजा (का) पुत्र

(च) अधिकरण-तत्पुरुष - पुरुषोत्तम - पुरुषों (में) उत्तम

दानवीर - दान (में) वीर

नरोत्तम - नरों (में) उत्तम

ध्यानमग्न - ध्यान (में) मग्न

**2. कर्मधारय समास**- जिस समास का दूसरा पद प्रधान होता है, उसे कर्मधारय समास कहा जाता है।

इस समास का पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है।





**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

**पहचान – कर्मधारय समास का विग्रह करने पर बीच में है जो या के समान आता है |**

नवयुवक-नव है जो युवक  
पीतांबर- पीत है जो अंबर  
परमेश्वर - परम है जो ईश्वर  
नीलकमल - नील है जो कमल  
महात्मा - महान है जो आत्मा  
कापुरुष - कुत्सित है जो पुरुष  
कमलनयन – कमल के समान नयन  
घनश्याम -घन के समान श्याम  
चन्द्रमुख – चन्द्र के समान मुख

**3. बहुव्रीहि समास-** इसमें कोई भी पद प्रधान नहीं होता। इसका समस्त पद किसी अन्य पद का विशेषण होता है, अर्थात् इस समस्त पद से किसी अन्य का बोध होता है। जैसे-  
चंद्रशेखर - चंद्र है शेखर (सिर) पर जिसके - महादेव  
चतुरानन-चार है आनन जिसके - ब्रह्मा  
वीणापाणि - वीणा है पाणि में जिसके-सरस्वती  
नीलकंठ - नील है कंठ जिसका - शिवजी  
दशानन- दस हैं आनन जिसके - रावण  
लम्बोदर – लम्बा है जिसका उदर -गणेश

**ध्यान दें – कुछ समास कर्मधारय और बहुव्रीहि दोनों में आते हैं | ऐसे स्थिति में जब दोनों विकल्प रहें तो बहुव्रीहि उत्तर लगाए**

**4. द्वंद्व-** इसके सभी पद प्रधान होते हैं और योजक अव्यय का लोप हो जाता है।

जैसे- हाथ-पाँव, माता-पिता, पिता-पुत्र, दाल-रोटी, पाप-पुण्य, भाई-बहन, घर-द्वार

**इस समास का विग्रह करने पर बीच में और , बहुव्रीहि, या, एवं आदि आता है |**

जैसे – माता-पिता = माता और पिता , दाल -भात = दाल एवं भात

**5. द्विगु समास-** जिस समास का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण होता है। इस समास का उत्तरपद प्रधान होता है।

जैसे - त्रिलोकी, पंचवटी, दोपहर, चौराहा, छदाम, सतसई, छमाही, दुअत्री, तिमाही

**6. अव्ययीभाव समास-** इसमें पहला पद अव्यय होता है। इसका समस्त पद क्रियाविशेषण अव्यय होता है।

जैसे- प्रतिदिन, प्रतिमास, यथासंभव, आजन्म, बेकाम, यथाशक्ति  
रातो -रात ,दिनों -दिन ,हाथों -हाथ आदि में भी अव्ययीभाव समास होता है |

**समान्यतः अव्ययीभाव समास के पहला पद में आ ,प्रति ,बे,यथा,भर आदि अव्यय लगा रहता है। इस समास में शब्दों की पुनरावृत्ति होता है।**

**ध्यान दें – जिस समास का नाकारात्मक अर्थ निकलता है ,उसे 'नञ'समास कहते हैं**

**समान्यतः : इसका पहला पद अ या अन होता है |**

जैसे – अज्ञान – न ज्ञान ,अधर्म – न धर्म , अमंगल – न मंगल  
अनदेखा – न देखा हुआ , अनजान – न जानने वाला

**वाक्य**

शब्दों का ऐसा समूह जो पूर्ण अर्थ दे ,वाक्य कहलाते हैं |

जब कोई शब्द वाक्य में प्रयोग हो जाता है ,तो वह पद कहलाता है |

**वाक्य के दो अंग होते हैं-**

(1) उद्देश्य और (2) विधेय।

**1. उद्देश्य** - जिसके बारे में कुछ कहा जाय, उसे 'उद्देश्य' कहते हैं।  
जैसे- 'सुरेश पुस्तक पढ़ता है।' इस वाक्य में 'सुरेश' के बारे में कहा गया है।

**2. विधेय-उद्देश्य** के बारे में जो कुछ कहा जाय, उसे 'विधेय' कहते हैं।  
जैसे- 'सुरेश पुस्तक पढ़ता है।' इस वाक्य में 'सुरेश' (उद्देश्य) के बारे में कहा गया है कि वह 'पुस्तक पढ़ता है'। अतः 'पुस्तक पढ़ता है' विधेय हुआ।

**वाक्य-संरचना**

संरचना या स्वरूप की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं-

(1) साधारण या सरल वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3) संयुक्त वाक्य

**1. साधारण या सरल वाक्य-** जिस वाक्य में एक ही क्रिया रहती है, उसे 'साधारण या सरल वाक्य' कहते हैं। इसमें एक उद्देश्य और एक विधेय रहता है। जैसे - बिजली चमकती है। पानी बरसता है। संजय सर पढ़ाते हैं |



# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

**2. मिश्र वाक्य-** जिस वाक्य में एक से अधिक साधारण या सरल वाक्य हों और उनमें एक मुख्य वाक्य हो और शेष उसके आश्रित हों, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं। जैसे- मैं यह जानता हूँ कि यह काम आपसे नहीं होगा। हमलोग जानते हैं की संजय सर हिंदी का नोड्ड देंगे।

**3. संयुक्त वाक्य -** जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल योजक ('और', 'अथवा' आदि) अव्यय द्वारा होता है, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं। जैसे- उसकी आँखें हँसती हैं, किंतु उसका हृदय रोता है। मैं आया और वह गया।

**अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद हैं-**

1. विधिवाचक वाक्य - मैं खा चुका हूँ।
2. निषेधवाचक वाक्य- मैं आज नहीं पढ़ूँगा।
3. आज्ञावाचक वाक्य - तुम आओ। तुम पढ़ो।
4. प्रश्नवाचक वाक्य- क्या तुम पढ़ रहे हो?
5. विस्मयवाचक वाक्य- ओह! यह पिट ही गया!
6. संदेहवाचक वाक्य - उसने कहा होगा।
7. इच्छावाचक वाक्य - तुम अपने काम में सफल रहो!
8. संकेतवाचक वाक्य - यदि तुम चलो तो मैं भी चलें।

**महत्वपूर्ण चिह्न**

- पूर्णविराम (।)  
अर्द्धविराम (;)  
अल्पविराम (,)  
योजक चिह्न (-)  
प्रश्नवाचक चिह्न (?)

**अशुद्ध**

**शुद्ध**

- |            |            |
|------------|------------|
| ■ अनुकूल   | ■ अनुकूल   |
| ■ अध्यन    | ■ अध्ययन   |
| ■ अद्वितिय | ■ अद्वितीय |
| ■ आर्शिवाद | ■ आशीर्वाद |
| ■ ईर्षा    | ■ ईर्ष्या  |
| ■ उँचाई    | ■ ऊँचाई    |
| ■ उन्नती   | ■ उन्नति   |
| ■ नमष्कार  | ■ नमस्कार  |
| ■ नछत्र    | ■ नक्षत्र  |
| ■ निरोग    | ■ नीरोग    |

- |             |             |
|-------------|-------------|
| ■ पूण्य     | ■ पुण्य     |
| ■ पुस्प     | ■ पुष्प     |
| ■ छिः छिः   | ■ छी छी     |
| ■ उपर       | ■ ऊपर       |
| ■ उज्वल     | ■ उज्ज्वल   |
| ■ उत्कृष्ट  | ■ उत्कृष्ट  |
| ■ गनित      | ■ गणित      |
| ■ गृहस्थ्य  | ■ गृहस्थ    |
| ■ चिन्ह     | ■ चिह्न     |
| ■ चांद      | ■ चाँद      |
| ■ छमा       | ■ क्षमा     |
| ■ ज्येष्ठ   | ■ ज्येष्ठ   |
| ■ यथेष्ठ    | ■ यथेष्ठ    |
| ■ रसायण     | ■ रसायन     |
| ■ रामायन    | ■ रामायण    |
| ■ बनावास    | ■ वनवास     |
| ■ छह        | ■ छः        |
| ■ अनाधिकार  | ■ अनधिका    |
| ■ पृष्ठ     | ■ पृष्ठ     |
| ■ प्राप्ती  | ■ प्राप्ति  |
| ■ पत्ति     | ■ पत्नी     |
| ■ प्रसंशा   | ■ प्रशंसा   |
| ■ प्रनाम    | ■ प्रणाम    |
| ■ प्रमेश्वर | ■ परमेश्वर  |
| ■ परिक्षा   | ■ परीक्षा   |
| ■ पुज्य     | ■ पूज्य     |
| ■ पुरष्कार  | ■ पुरस्कार  |
| ■ प्रशाद    | ■ प्रसाद    |
| ■ प्रतिकूल  | ■ प्रतिकूल  |
| ■ प्रान     | ■ प्राण     |
| ■ परस्थिति  | ■ परिस्थिति |
| ■ पिचास     | ■ पिशाच     |
| ■ ब्रम्ह    | ■ ब्रह्म    |
| ■ बुढ़ा     | ■ बूढ़ा     |
| ■ ब्राम्हन  | ■ ब्राह्मण  |
| ■ भष्म      | ■ भस्म      |
| ■ मट्टी     | ■ मिट्टी    |



# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

|                         |                         |            |            |
|-------------------------|-------------------------|------------|------------|
| ■ मुनीगण                | मुनिगण                  | ■ अर्थ     | अनर्थ      |
| ■ मैथलीशरण              | मैथिलीशरण               | ■ अमावस्या | पूर्णिमा   |
| ■ श्रीयुत्              | श्रीयुत                 | ■ अपना     | पराया      |
| ■ दांत                  | दाँत                    | ■ अग्नि    | जल         |
| ■ हिंदु                 | हिंदू                   | ■ अपमान    | सम्मान     |
| ■ हंसना                 | हँसना                   | ■ अमृत     | विष, गरल   |
| ■ हिन्दूस्तान           | हिन्दुस्तान             | ■ अंधकार   | प्रकाश     |
| ■ पैत्रिक               | पैतृक                   | ■ अच्छा    | बुरा       |
| ■ एकत्रित               | एकत्र                   | ■ आधुनिक   | प्राचीन    |
| ■ उपरोक्त               | उपर्युक्त               | ■ आयात     | निर्यात    |
| ■ निरस                  | नीरस                    | ■ आकाश     | पाताल      |
| ■ विद्वान               | विद्वान्                | ■ आत्मा    | अनात्मा    |
| ■ व्यावहार              | व्यवहार                 | ■ आदर      | अनादर      |
| ■ धनमान                 | धनवान्                  | ■ आदि      | अंत        |
| ■ बिठाया                | बैठाया                  | ■ आशा      | निराशा     |
| ■ पहिले                 | पहले                    | ■ आस्तिक   | नास्तिक    |
| ■ सप्ताहिक              | साप्ताहिक               | ■ आजादी    | गुलामी     |
| ■ सिंदूर                | सिंदूर                  | ■ आय       | व्यय       |
| ■ सूर्य                 | सूर्य                   | ■ आवश्यक   | अनावश्यक   |
| ■ सृष्टी                | सृष्टि                  | ■ इहलोक    | परलोक      |
| ■ सम्राज्य              | साम्राज्य               | ■ इच्छा    | अनिच्छा    |
| ■ संसारिक               | सांसारिक                | ■ उपसर्ग   | प्रत्यय    |
| ■ समीति                 | समिति                   | ■ उदय      | अस्त       |
| ■ स्वास्थ्य             | स्वास्थ्य               | ■ उन्नति   | अवनति      |
| ■ स्मर्ण                | स्मरण                   | ■ उदार     | अनुदार     |
| ■ श्रृंगार              | श्रृंगार                | ■ उचित     | अनुचित     |
| ■ शक्ति                 | शक्ती                   | ■ उत्तम    | निम्न, अधम |
| ■ बुद्धिवान             | बुद्धिमान्              | ■ उत्थान   | पतन        |
| ■ भगमान                 | भगवान्                  | ■ उधार     | नकद        |
| ■ घनिष्ठ                | घनिष्ठ                  | ■ उजाला    | अँधेरा     |
| ■ आंख                   | आँख                     | ■ ऊँचा     | नीचा       |
| ■ बांस                  | बाँस                    | ■ एकता     | अनेकता     |
| <b>विपरीतार्थक शब्द</b> |                         | ■ ऐड़ी     | चोटी       |
| <b>शब्द</b>             | <b>विपरीतार्थक शब्द</b> | ■ कठोर     | कोमल       |
| ■ अग्रज                 | अनुज                    | ■ कठिन     | सरल        |
| ■ अनुकूल                | प्रतिकूल                | ■ कृतज्ञ   | कृतघ्न     |
| ■ अनुराग                | विराग                   | ■ कटु      | मधु        |



# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

|           |              |            |                 |
|-----------|--------------|------------|-----------------|
| ▪ कृपण    | दानी, उदार   | ▪ नख       | शिख             |
| ▪ कायर    | निडर         | ▪ नगर      | ग्राम           |
| ▪ कुटिल   | सरल          | ▪ नकली     | असली            |
| ▪ कुसुम   | वज्र, कंटक   | ▪ नवीन     | प्राचीन         |
| ▪ क्रोध   | अक्रोध       | ▪ न्याय    | अन्याय          |
| ▪ खरीद    | बिक्री       | ▪ नित्     | अनित्य          |
| ▪ गहरा    | छिछला, समतल  | ▪ नुकसान   | फायदा           |
| ▪ गरम     | ठंडा         | ▪ पंडित    | मुख             |
| ▪ गरीब    | अमीर         | ▪ प्रशंसा  | निंदा           |
| ▪ गरल     | सुधा, अमृत   | ▪ प्रसन्न  | खिन्न           |
| ▪ गीला    | सूखा         | ▪ पाप      | पुण्य           |
| ▪ गुप्त   | प्रकट        | ▪ प्रेम    | घृणा            |
| ▪ गुण     | अवगुण, दोष   | ▪ पुरस्कार | दंड             |
| ▪ घर      | बाहर         | ▪ पुरुष    | नारी            |
| ▪ चढ़ाव   | उतार         | ▪ प्रारंभ  | अंत             |
| ▪ चटकीला  | फीका         | ▪ प्रातः   | सायं            |
| ▪ चोर     | साधु         | ▪ पक्ष     | विपक्ष          |
| ▪ जन्म    | मृत्यु, मरण  | ▪ बढ़िया   | घटिया           |
| ▪ जय      | पराजय        | ▪ बहादुर   | डरपोक           |
| ▪ जड़     | चेतन         | ▪ बाढ़     | सूखा            |
| ▪ जल      | स्थल         | ▪ मानव     | दान             |
| ▪ ज्येष्ठ | कनिष्ठ       | ▪ माता     | पिता            |
| ▪ जाड़ा   | गर्मी        | ▪ मिलन     | विरह            |
| ▪ जीत     | हार          | ▪ राम      | रावण            |
| ▪ जीवन    | मरण          | ▪ राज      | रंक, प्रजा      |
| ▪ झूठ     | सच           | ▪ लघु      | गुरु            |
| ▪ झोपड़ी  | महल          | ▪ लाभ      | हानि            |
| ▪ तरुण    | वृद्ध        | ▪ भीगा     | सूखा            |
| ▪ तीव्र   | मंद          | ▪ वृद्ध    | बालक            |
| ▪ तुच्छ   | महान         | ▪ वसंत     | पतझड़           |
| ▪ तेज     | सुस्त, मंद   | ▪ विस्तार  | संक्षेप         |
| ▪ थोक     | खुदरा, फुटकर | ▪ विजय     | पराजय           |
| ▪ थोड़ा   | बहुत         | ▪ विष      | अमृत            |
| ▪ दूर     | नजदीक        | ▪ विधवा    | सधवा            |
| ▪ धनी     | निर्धन       | ▪ वृष्टि   | अनावृष्टि       |
| ▪ नया     | पुराना       | ▪ शांति    | अशांति, क्रांति |
| ▪ नर      | नारी         | ▪ शीतल     | उष्ण            |





# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNLJ3juxlfK31A1Q>**

- सुलभ दुर्लभ
- सौभाग्य दुर्भाग्य
- सदी गर्मी
- सुख दुःख
- सजीव निर्जीव
- स्वर्ग नरक
- स्वदेश परदेश, विदेश
- स्तुति निन्दा
- स्वामी सेवक
- स्वतंत्र परतंत्र
- सबल दुर्बल, निर्बल
- सच्चा झूठा
- सम्मान अपमान
- सृष्टि प्रलय
- संधि विग्रह
- सार्थक निरर्थक
- सुबह शाम
- सुविधा असुविधा
- सुगंध दुर्ग
- हिंसा अहिंसा
- हानि लाभ
- हास विकास
- हार जीत
- क्षमा दंड
- क्षम्य अक्षम्य
- क्षर अक्षर

**पर्यायवाची शब्द**

- ✍ **आग-** अग्नि, अनल, ज्वाला, दहन, पावक,
- ✍ **आँख -** अक्षि, चक्षु, दृग, दृष्टि, नयन, नेत्र, लोचन, विलोचन
- ✍ **आकाश-** अंतरिक्ष, अंबर, अनंत, अभ्र, गगन, तारापथ, नभ, नाक, पुष्कर, व्योम
- ✍ **इंद्र-** अमरपति, पुरंदर, मेघवाहन, वज्रधर, वज्री, शचीश, वासव, वृषा, शक्र, सुरपति, सुरेश
- ✍ **कमल-** अम्भोज, अरविद, जलज, तामरस, नलिन, पंकज, पद्म, पुष्कर, महोत्पल, राजीव, वनज, सरोज, शतदल
- ✍ **गंगा-** जाह्नवी, विपथगा, देवनदी, भागीरथी, मंदाकिनी, विष्णुपदी, सुरसरि

- ✍ **गणेश-** एकदंत, गजानन, गणाधिप, लंबोदर, विनायक, गजवदन, गिरिजानंदन
- ✍ **घर-** आगार, आलय, आवास, कुटी, गेह, गृह, धाम, निकेतन, निलय, भवन, सदन, शाला
- ✍ **घोड़ा-** अश्व, घोटक, तुरग, तुरंग, तुरंगम, बाजि, सैधव, हय
- ✍ **चंद्रमा-** इंदु, कलाधर, कलानिधि, निशाकर, निशानाथ, मयंक, मृगांक, राकापति, राकेश, बिधु, शशि, सुधांशु
- ✍ **तालाव-** जलाशय, तड़ाग, पल्लव, पुष्करिणी, सर, सरसी, सरोवर
- ✍ **देवता-** अदितिनंदन, अमर, अमर्त्य, अस्वप्न, आदितेय, आदित्य, त्रिदश, देव, दैवत, निर्जर, सुर
- ✍ **नदी-** तटिनी, तरंगिणी, निर्झरिणी, शैवालिनी, सरित, स्रोतस्विनी
- ✍ **पक्षी-** अंडज, खग, द्विज, पतंग, विहंग, विहंगम, विहग, शकुन, शकुंत
- ✍ **पहाड़-** अचल, अद्रि, गिरि, गोत्र, धर, नग, पर्वत, भूधर, महीधर, मेरु, शैल
- ✍ **पार्वती-** अपर्णा, अंबिका, आर्या, उमा, गौरी, गिरिजा, भवानी, रुद्राणी, शिवा
- ✍ **पानी-** जल, नीर, सलिल, अंबु, अंभ, उदक, तोय, जीवन, वारि, पय, अमृत, मेघपुष्प, सारंग
- ✍ **पृथ्वी-** भू, भूमि, घरा, धरती, वसुमति, वसुधा, वसुंधरा, अविनि, मेदिनी, क्षिति, धरणी, धरित्री
- ✍ **पुत्री-** आत्मजा, तनया, सुता, दुहिता, सूनू, तनुजा, नंदिनी, बेटी, लड़की
- ✍ **पत्नी-** गृहिणी, अर्द्धांगिनी, जाया, दारा, भार्या, वामा, वामांगी, वल्लभा, कलत्र, सहधर्मिणी
- ✍ **आम -** आम्र, रसाल, सहकार
- ✍ **इंद्र -** सुरेश, पुरंदर, महेंद्र, देवपति
- ✍ **कपड़ा -** चीर, अम्बर, वसन, पट, वस्त्र
- ✍ **कमल -** पंकज, जलज, नीरज, अरविन्द, अम्बुज, कुमुद
- ✍ **चिड़िया-खग, पक्षी, पंछी, परिंदा, विहंग**
- ✍ **जंगल -** वन, अरण्य, कानन
- ✍ **दानव -** असुर, दैत्य, राक्षस, सुरारी
- ✍ **फूल -** कुसुम, पुष्प, सुमन
- ✍ **महादेव -** शिव, शम्भू, महाकाल, पशुपति, शंकर, नीलकंठ
- ✍ **रात -** निशा, रजनी, रात्री
- ✍ **सरस्वती -** शारदा, हंसवाहिनी, वीणापानी, विद्यादेवी
- ✍ **सूर्य -** आदित्य, दिनकर, रवि, भानु, भास्कर, दिवाकर



# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

हवा - पवन, वायु, समीर, अनिल

### अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

#### वाक्यखंड

- जिसे चार भुजाएँ हैं
- जिसे दस आनन (मुख) हैं
- जिसके समान द्वितीय (दूसरा) न हो
- जिसके हृदय में दया न हो
- जिसके दो पद (पैर) हैं
- जिसका कोई नाथ न हो
- जिसे ईश्वर या वेद में विश्वास न हो
- जिसे ईश्वर या वेद में विश्वास हो
- जिस स्त्री का धव (पति) मर गया है
- जिसका जन्म अनु (पीछे) हुआ हो
- यशवाला
- तेजवाला
- जो सब कुछ जानता है
- जो बहुत जानता है
- बीता हुआ
- जो किये गये उपकारों को जानता (मानता) है
- जो किये गये उपकारों को नहीं मानता है
- नहीं मरनेवाला
- जो किसी की ओर से है
- गिरा हुआ
- जो बहुत बोलता है
- कठिनाई से समझने योग्य
- आगे होनेवाला
- सब कुछ भक्षण करनेवाला
- जिसकी उपमा न हो
- जो नहीं हो सकता
- जो आमिष (मांस) नहीं खाता
- जो अक्षर (पढ़ना-लिखना) जानता है
- जो स्वार्थ (अपनी ही भलाई) चाहता है
- जो परमार्थ (दूसरों की भलाई) चाहता है
- आशा से अधिक
- जो पर (दूसरों) के अधीन है
- जो देखने में प्रिय लगता है

#### एक शब्द

- चतुर्भुज
- दशानन (रावण)
- अद्वितीय
- निर्दय
- द्विपद
- अनाथ
- नास्तिक
- आस्तिक
- विधवा
- अनुज
- यशस्वी
- तेजस्वी
- सर्वज्ञ
- बहुज्ञ
- अतीत
- कृतज्ञ
- कृतघ्न
- अमर
- प्रतिनिधि
- पतित
- वाचाल
- दुर्बोध
- भावी
- सर्वभक्षी
- अनुपम
- असंभव
- निरामिष
- साक्षर
- स्वार्थी
- परमार्थी
- आशातीत
- पराधीन
- प्रियदर्शी

- जो जन्म से अंधा है - जन्मांध
- जो नष्ट होनेवाला है - नश्वर
- आँखों के सामने - प्रत्यक्ष
- अपने परिवार के साथ - सपरिवार
- जो स्त्री कविता लिखती है - कवयित्री
- जो शत्रु की हत्या करता है - शत्रुघ्न
- जो मांस का आहार करता है - मांसाहारी
- जो शाक का आहार करता है - शकाहारी
- जो फल का आहार करता है - फलाहारी
- जो विज्ञान जानता है - वैज्ञानिक
- जो व्याकरण जानता है - वैयाकरण
- बेचनेवाला - विक्रेता
- आकाश को चूमनेवाला - आकाशचुंबी
- वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं - श्मशान
- जो लोक में संभव न हो - अलौकिक
- जो मन को हर ले - मनोहर
- शक्ति के अनुसार - यथाशक्ति
- ग्राम का रहनेवाला - ग्रामीण
- नगर का रहनेवाला - नागरिक, नागर
- नया (तुरंत का) जनमा हुआ - नवजात
- पुत्र की वधू - पुत्रवधू
- पुत्र का पुत्र - पौत्र
- जो धर्म करता है - धर्मात्मा
- जो साँप पकड़ता है - सँपेरा
- यात्रा करनेवाला - यात्री
- जहाँ लोगों का मिलन हो - सम्मेलन
- जहाँ नदियों का मिलन हो - संगम
- सुख देनेवाला - सुखद
- दुःख देनेवाला - दुःखद
- जिसका उदर लंबा हो - लंबोदर
- जिस पुरुष की स्त्री मर गयी है - विधुर
- जो पीने योग्य हो - पेय
- मरण तक - आमरण
- जन्म भर - आजन्म
- समान उदर से जन्म लेनेवाला - सहोदर
- कम बोलनेवाला - मितभाषी
- जो नाचता है - नर्तक, नृत्यकार



# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY — SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

- जो अभिनय करता है - अभिनेता
- पढ़ने योग्य - पठनीय
- दर्शन के योग्य - दर्शनीय

### मुहावरे

- आँख मारना (इशारा करना)
- आँख की किरकिरी होना (आँख का काँटा होना)
- आँख फेरना (खिलाफ होना)
- आँखों में चर्बी छाना (घमंड में चूर होना)
- आँख भर आना (आँसू आना)
- आँखों में धूल डालना (धोखा देना)
- आँखें खुलना (सावधान होना)
- आँखों में बसना (हृदय में समाना)
- कमर टूटना (बेसहारा होना)
- कान देना (ध्यान देना)
- कान खोलना (सावधान होना)
- कान पकड़ना (बाज आना)
- कलेजा काँपना (डरना)
- काल के गाल में जाना (मृत्यु के मुँह में पड़ना)
- खून खौलना (गुस्सा चढ़ना)
- खून का घूँट पीना (भीतर-ही-भीतर सहकर रह जाना) -
- खेत आना (युद्ध में शहीद होना)
- गले का हार (बहुत प्यारा)
- गाल बजाना (डिंग हाँकना)
- गर्दन पर सवार होना (पीछा न छोड़ना)
- चंपत होना (भाग जाना)
- नाक का बाल होना (बहुत प्यारा होना)
- नौ-दो ग्यारह होना (भाग जाना)
- नाकों दम करना (परेशान करना)
- नाक कटना (इज्जत जाना)
- पेट काटना (अपने भोजन तक में बचत)
- पौ-बारह (लाभ-ही-लाभ)
- पानी उतारना (इज्जत लेना)
- पानी-पानी होना (लज्जित होना)
- फूला न समाना (बहुत खुश होना)
- बीड़ा उठाना (दायित्व लेना)
- मुँह ताकना या जोहना (किसी का आसरा जोहना)
- मुँह की खाना (पहल करके हार जाना)

- मुँह धो रखना (आशा न रखना)
- मुँह में पानी आना या भरना (लालच होना)
- मौत से या आग से खेलना (खतरा मोल लेना)
- रंग उतरना (फीका होना)
- रंग जमना (धाक जमना)
- लोहा मानना (श्रेष्ठ समझना)
- लोहे के चने चबाना (बहुत कठिनाई झेलना)
- सिर उठाना (विरोध में खड़ा होना)
- सिर पर सवार होना (पीछे पड़ना)
- सिर पर आ जाना (बहुत नजदीक होना)
- सिर खुजलाना (बहाना करना)
- सिर धुनना (शोक करना)
- सिर-आँखों पर होना (सहर्ष स्वीकार करना)
- सिर चढ़ाना (शोक करना)
- सिर फिर जाना (पागल हो जाना)
- सिर गंजा कर देना (खूब पीटना)
- हाथ खींचना (अलग होना)
- हाथ देना या लगाना (सहायता करना)
- हाथोहाथ (शीघ्र, जल्दी)
- हाथ बंटाना (सहयोग देना)
- हवा खाना (शुद्ध हवा का सेवन करना या व्यर्थ होना)
- हाथ मारना (उड़ा लेना)
- हाथ मलना (पछताना)

### सभी के भेद एक साथ

- वर्ण - 2
- उत्पत्ति के आधार पर शब्द के भेद = 4
- रचना या बनावट के आधार पर शब्द के भेद = 3
- रूपांतरण के आधार पर शब्द के भेद = 2
- संज्ञा - 5
- सर्वनाम - 6
- विशेषण - 4
- क्रिया - 2
- काल - 3
- वर्तमान काल - 3
- भूतकाल - 6
- भविष्यत् काल - 3



# DISHA ONLINE CLASSES

DIRECTION TO SUCCESS...

## हिंदी व्याकरण

बोर्ड परीक्षा के लिए सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Course Information  
Call - 7700879453

BY – SANJAY SIR  
(Director of Disha Online Classes)

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

- (13) लिंग -2
- (14) वचन -2
- (15) पुरुष -3
- (16) संधि - 3
- (17) स्वर संधि -5

- (18) वाक्य - 3
- (19) वाच्य - 3
- (20) कारक -8
- (21) समास -6
- (22) पदबंध -5



Note – अपनी तैयारी को बहतरीन करने के लिए दिए गए Video पर Click कर के जरूर देखें |

☎ किसी भी सहायता के लिए आप कॉल /व्हाट्सएप कर सकते हैं।

Helpline No.

- ☎ 7700879453
- ☎ 6201320598
- ☎ 9234080284



Motivation Channel Link :-



[https://youtube.com/@sanjaysir\\_ka\\_ladla](https://youtube.com/@sanjaysir_ka_ladla)

Full Course App Link :- <https://play.google.com/store/apps/details?id=co.dishaonlineclasses>

☎ 10वीं के लिए :-

Youtube: <https://www.youtube.com/@DishaOnlineClasses>

Telegram: <https://telegram.me/dishaonlineclasses>

Disha Online Test App:- <https://play.google.com/store/apps/details?id=com.disha.testborad>

**NOTE** – हम आपके लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं, परन्तु सफलता आपके मेहनत पर निर्भर करती हैं |

**WhatsApp Channel - <https://whatsapp.com/channel/0029Va5QfNL73juxlfK31A1Q>**

बिहार में मैट्रिक व इंटर की सबसे बेहतरीन तैयारी के लिए आज ही YouTube पर Disha Online Classes से जुड़ें | Mob – 7700879453 , 6201320598